बढ़ने पर भी वस्तु की मांग पूर्ववत बनी रहती है तथा मांग एवं पूर्ति का नया संतुलन बिन्दु P से P_1 बिन्दु पर ही जाता है। इसप्रकार पूर्णतया बेलोच मांग वाली वस्तुओं पर करों का पूरा पूरा भार उपभोक्ताओं को वहन करना होता है। प्रायः इसप्रकार की मांग लोच नहीं पाई जाती है। प्रायः व्यवहार में तीन प्रकार की मांग की लोच पाई जाती है। ये हैं बेलोच, लोचदार व अधिक लोचदार मांग की लोच के आधार से जानते है। मांग की लोच ज्यों ज्यों लोचदार होती जायेगी त्यों त्यों करों का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर कम होगा।

B वस्तु की पूर्ति की लोच

वस्तु की पूर्ति की लोच प्रायः समय तत्व के ऊपर निर्भर करती है। ज्यों-ज्यों समय बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों पूर्ति की लोच लोचदार होती जायेगी। पूर्ति की लोच की विभिन्न परिस्थितियों में कर विवर्तन की परिस्थितियों का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

(1) पूर्णतया लोचदार पूर्ति

यदि किसी वस्तु की पूर्ति की लोच पूर्णतया लोचदार हो तो ऐसी दशा में करभार का विवर्तन उपभोक्ताओं के ऊपर किया जा सकता है

इसे चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते है —

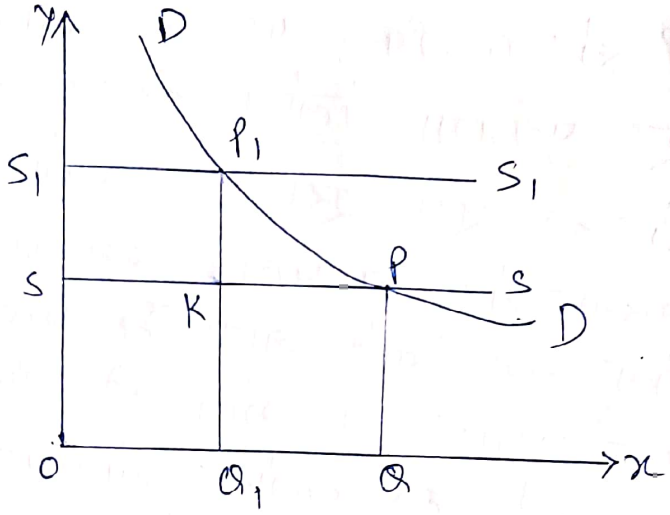

उपरोक्त चित्र में कर लगाने से पूर्व पूर्ति रेखा SS है। इस रेखा पर मांग और पूर्ति का संतुलन P बिन्दु पर है तथा वस्तु की कीमत OS या OP होता है। माना कि अब KP_1 के बराबर सरकार कर लगा देती है। कर के लगाने से पूर्ति रेखा S_1S_1 हो जाता है अब मांग और पूर्ति का नया संतुलन P_1 बिन्दु पर हो जाता है। इस सन्तुलन पर वस्तु की कीमत QP से बढ़कर Q_1P_1 हो जाता है। चूंकि अतिरिक्त मुल्य वृद्धि KP_1 के बराबर है और इतनी ही राशि पर कर भी लगाए गए थे। इस प्रकार उत्पादक करो का सम्पूर्ण राशि का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर कर देता है परन्तु इस प्रकार की स्थिति व्यवहारिक नहीं हो सकती है।

(ii) पूर्णतया बेलोच पूर्ति

इस प्रकार की पूर्ति अति अल्पकाल में होने की कल्पना की जाती है। अतः कर का पूरा

भार उत्पादक स्वयं वहन कर लेता है। इसे निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते है —

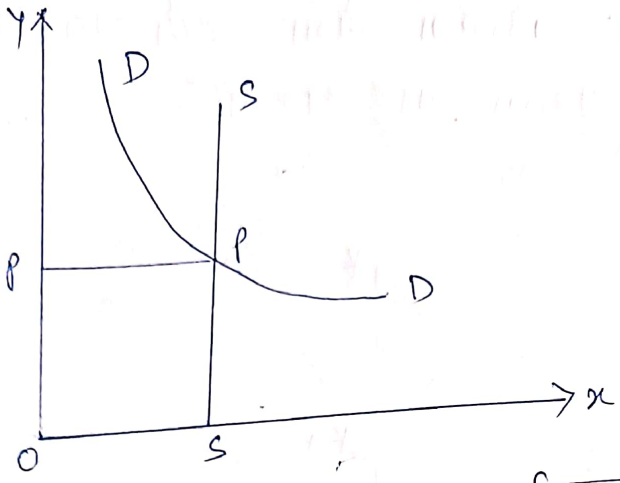

उपरोक्त चित्र में SS रेखा पूर्णतया बेलोच पूर्ति को दर्शाता है अतः मांग के घटने या बढ़ने पर पूर्ति पर कोई असर नहीं पड़ता है। यदि वस्तु पर कर लगाया जाता है तो भी वस्तु की कीमत पूर्ववत SP या OP, के ही बराबर होती है और वस्तु की पूर्ति हर दशा में OS के ही बराबर रहती है अतः पूर्णतया बेलोच पूर्ति की दशा में उत्पादक कर के भार का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर नहीं कर सकता है लेकिन प्रायः यह स्थिति भी व्यवहार में कम पाई जाती है।

(iii) दोनों के बीच की स्थिति

प्रायः व्यवहार में पूर्णतया लोचदार व पूर्णतया बेलोच पूर्ति की स्थिति नहीं देखी जा सकती है। परन्तु इन दोनों के बीच की स्थिति व्यवहारिक है। इस स्थिति में क्रेता एवं विक्रेता पूर्ति के अनुसार करभार का विवर्तन एक दूसरे की ओर कर सकते हैं। अतः

पूर्ति की लोच की विभिन्न स्थितियों में कर भार का विभाजन क्रेताओं व विक्रेताओं के बीच कितना होगा इसे निम्न चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है —

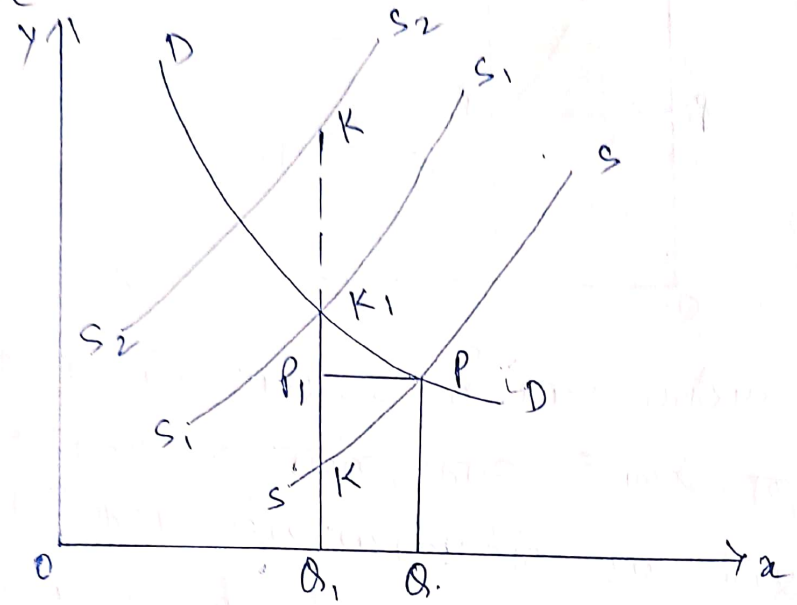

उपरोक्त चित्र में SS, S_1S_1, S_2S_2 क्रमशः पूर्ति की लोच की वक्र रेखाएं पूर्ति की लोच की विभिन्न दशाओं को व्यक्त करती है। चित्र में SS पूर्ति वक्र कम लोचदार वक्र है DD रेखा वस्तु की मांग को व्यक्त करती है। जब वस्तु पर KK1 कर लगाया जाता है तब इस कर में से उपभोक्ता की ओर केवल P_1K_1 राशि के बराबर करों का विवर्तन हो पाता है और शेष राशि KP_1 के बराबर करों के भार को उत्पादक स्वयं वहन कर लेता है जो उपभोक्ताओं की अपेक्षा कई गुणा अधिक है। जब वस्तु की पूर्ति की लोच S_2S_2 पहले से अधिक लोचदार हो जाती है तब कर का विवर्तन विक्रेता की ओर बहुत कम होता है तथा करों का निर्वतक अधिकांश

भार उपभोक्ताओं के ऊपर विवर्तित कर दिया जाता है। S_2S_2 पूर्ति वक्र इकाई कर मान P_1K_1 कर भार को वहन करता है जबकि उपभोक्ताओं की ओर P_1K के बराबर कर विवर्तित किया जाता है।

इस प्रकार ज्यों ज्यों पूर्ति की लोच बेलोच होती जायेगी त्यों त्यों करों का विवर्तन कम होगा और पूर्ति की लोच के बढ़ने के साथ साथ करों का विवर्तन भी अधिक हो सकेगा। डाल्टन के अनुसार मांग पूर्ति के लोच के आधार पर कर का विवर्तन विक्रेता पूर्ति को कम कर के कर के भार को क्रेताओं पर ढकेलने का प्रयत्न करता है और क्रेता इसकी मांग कम कर के विक्रेताओं पर विवर्तित करने का प्रयत्न करता है। इन दोनों की सफलता इनकी सापेक्षिक शक्तियों पर निर्भर करती है।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics